श्री राम चन्द्र मिशन®

नवम्बर २०१०

भाग ३, अंक ६

India ECHOES

ONE WORLD ONE HUMANITY

For Private Circulation Only

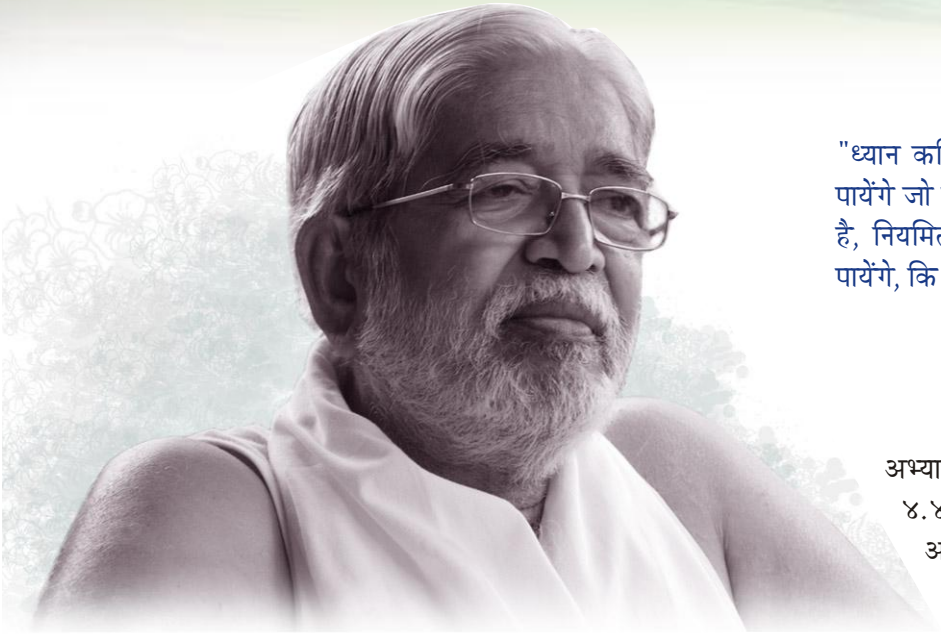

"ध्यान करिये, धीरे–धीरे सब कुछ हटा दीजिये और तब आप वह पायेंगे जो जन्म के समय मेरा चरित्र था, यदि आपकी साधना सम्पूर्ण है, नियमित है और दस नियमों के सिद्धान्तों के अनुसार है, आप पायेंगे, कि मैं आत्मा हूँ जिसका कोई चरित्र नहीं है।"

२१ सितम्बर को नार्थ अमेरिका के सम्मेलन के बाद गुरुदेव गायत्री और आश्रम के बीच आते–जाते रहे। सप्ताह के प्रारम्भ में वे गायत्री में चले जाते और वहाँ अभ्यासियों से मिलते, सत्संग कराते और सप्ताह के अंत में वे वापस आश्रम आ जाते थे।

एक दिन गायत्री में कॉफी के समय डॉक्टर और मरीज के सम्बन्धों के बारे में बात करते हुये उन्होंने कहा कि "विश्वास की अनुपस्थिति में ही भय उत्पन्न होता है।"

९ से २३ सितम्बर तक पूरे २ हफ्ते तक वे आश्रम में ही रहे। बीच में

१६ सितम्बर को एक दिन के लिये वे पुडुचेरी (जो पहले पांडुचेरी के नाम से जाना जाता था) गये। वहाँ पर पुडुचेरी, कडुलोर, विल्लुपुरम और नेवेल्ली केन्द्र के अभ्यासियों ने होटेल ड्यून एको रेज़ौर्ट में उनका जोरदार स्वागत किया। अभ्यासियों के रहने, खाने तथा सत्संग का इन्तज़ाम पुडुचेरी के जवाहर नवोदया विद्यालय में किया गया था। शाम को स्कूल के विद्यार्थियों ने गुरुदेव का स्वागत करते हुए कुछ भजन गाये जिसके बाद गुरुदेव ने सत्संग करवाया।

१७ तारीख की सुबह गुरुदेव ने सत्संग करवाया जिसके बाद भाई अजय भट्टर ने वार्ता दी। बहन वर्जिन ने कत्थक शैली में बहुत सुन्दर नृत्य प्रस्तुत किया। स्कूल स्टॉफ के १० सदस्यों ने साधना शुरू करने की इच्छा ज़ाहिर की। गुरुदेव ने विश्राम किया तथा उनके साथ आये हुए अभ्यासियों के साथ बातचीत करके समय गुज़ारा। शाम को ४.४५ पर उन्होंने चेन्नई के लिये प्रस्थान किया। वहाँ के अल्पसंख्यक अभ्यासियों के लिये गुरुदेव का दौरा बहुत ही अप्रत्याशित और आश्चर्यजनक तोहफा था जिससे स्थानीय अभ्यासियों को उनके नज़दीक रहने का मौका मिला।

गुरुदेव ने कई बार ओमेगा स्कूल का दौरा किया, एक बार उन्होंने हॉस्टल के छात्रों के साथ रात्रि–भोज किया और एक अन्य अवसर पर वे क्रिकेट मैच देखने गये। कुछ छात्रों का गाना सुनकर उन्होंने कहा कि मैं उम्मीद करता हूँ कि इस स्कूल में ज़्यादा से ज़्यादा संगीत के कार्यक्रम होंगे। अपने इस दौरे में उन्होंने छात्रों को विद्या से ज़्यादा विवेक अर्जित करने का आह्वान करते हुए कहा कि उनके लिये यह बात ज़्यादा मायने रखती है कि यह स्कूल आध्यात्मिक हो, न कि हार्वर्ड जैसा।

चेन्नई के अभ्यासी इस बात से बहुत खुश हैं कि गुरुदेव २ महीनों से वहीं पर हैं तथा वे उन्हें अकसर देख पाते हैं। अब वहाँ के अभ्यासियों के लिये उनके कार्यालय में जाना भी अधिक आसान हो गया है जिसकी वजह से वे उनसे ज़्यादा बार मिल पाते हैं। कभी- कभी सप्ताहिक दिनों में जब वे शाम के समय सत्संग करवाते हैं तो उन्हें सत्संग में शामिल होने का भी मौका मिल जाता है।

रविवार के सत्संग के दिन सबके हृदय खुशी से खिल उठते हैं। प्रति रविवार को सत्संग के समय गुरुदेव को देखकर वे इतने खुश होते हैं कि पूरे हफ्ते भर उसका इन्तज़ार करते हैं। हुबली, डिन्डीगुल तथा अन्य केन्द्रों के अभ्यासी भी वहाँ पर गये तथा गुरुदेव के प्रेम और कृपा के प्रात्र बने।

गुरुदेव के कार्यालय के दक्षिण पूर्वी कोने में एक सुन्दर मंडप के अन्दर राधा-कृष्ण की बहुत सुन्दर मारबल की मूर्ति लगाई गई है। गुणों का प्रतिनिधितत्व करती हुई नारी की मूर्ति को दूसरी जगह लगा दिया गया है। पूजा, श्रद्धा और अर्चना की मूर्तियों को पहले ही ध्यान-कक्ष के मुख्य द्वार पर, दोनो तरफ के लॉन में लगा दिया गया है और सड़क की दूसरी तरफ ध्यान कक्ष की तरफ मुँह किये हुए गंगा की मूर्ति को लगाया जाना अभी बाकी है।

९-१२ अक्टूबर को बाबूजी मेमोरियल आश्रम, चेन्नई में मिशन के भारत के कार्यकर्ताओं के लिये 'चरित्र विकास' पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें कार्यकारी समिति के सदस्य, कई केन्द्रों के ज़ोन प्रभारी तथा केन्द्र प्रभारी एवं मिशन के अन्य कार्यकर्ताओं समेत लगभग १०० अभ्यासी शामिल थे।

कार्यकर्ताओं के लिये गुरुदेव का सन्देश स्पष्ट था कि दूसरों में परिवर्तन लाने से पहले उन्हें खुद में परिवर्तन लाना चाहिये। ९ तारीख की शाम को सब प्रतिभागियों के पहुँचने के बाद गुरुदेव ने अचानक से डारमेटरी 'ए' में उन सबके साथ रात्रि-भोज करने का निर्णय किया। गुरुदेव इस कार्यक्रम के आयोजन से काफी उत्साहित नज़र आ रहे थे। उन्होंने कहा कि, "मैं प्रतिभागियों के मन में भ्रांति पैदा करना चाहूँगा क्योंकि भ्रांति से ही स्पष्टता आती है।"

और जैसा कि उन्होंने कहा था, वैसा ही हुआ। अपनी पहली ही वार्ता में उन्होंने वेद, महाभारत, रामायण, भगवद् गीता आदि की हमारी प्राचीन मान्याताओं पर सवाल उठाये और उनके आपसी विरोधाभास के बारे में बताया, जिसके कारण सभी के मन में नैतिकता और चरित्र के बारे में भ्रम पैदा हो गया। अन्त में उन्होंने कहा कि हम सभी को और कुछ नहीं करना है बस अपने हृदय की तरफ वापस लौटना है। बाद में जब उन्हें बताया गया कि अपनी वार्ता में उन्होंने बहुत सी चीजों को ध्वस्त कर दिया, इस पर उनका कहना था कि "जो व्यक्ति सोचता है, वही हिम्मत करता है। हमें अपनी सोच में साहसी होना चाहिये।"

वक्ताओं ने 'चरित्र' के अलग-अलग पहलुओं पर प्रस्तुति दी जिसमें निम्न विषय शामिल थे: योगिक नज़रिया (भाई के. एस. सुब्रमनियम), लालाजी महाराज की शिक्षायें (भाई सन्तोष श्रीनिवासन), शिक्षा में मानवीय गुण (भाई एस. भवानीशंकर), कारोबार में चरित्र की भूमिका, (भाई प्रमोद सदरजोशी), नैतिकता में इसकी अभिव्यक्ति (भाई पी. आर. कृष्णा), रवैये में इसकी अभिव्यक्ति (भाई कैप्टन बी. चक्रपानी) और दस नियमों की शिक्षा (भाई एस. प्रकाश)। प्रतिभागियों ने अलग-अलग दस समूहों में इससे मिलते-जुलते विषयों पर

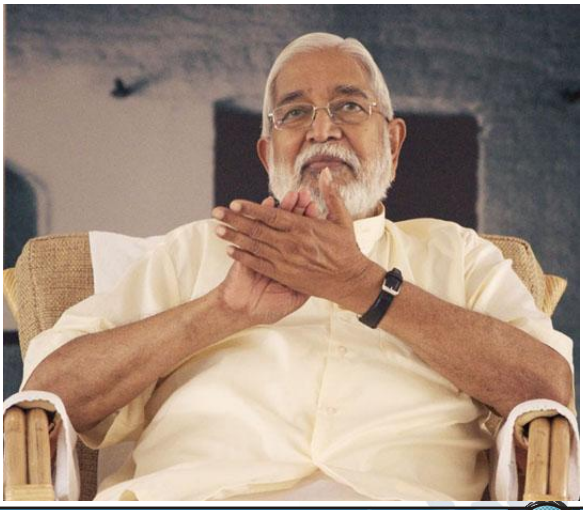

वाद-विवाद किया और पूर्ण अधिवेशन के सामने अपनी प्रस्तुति दी।

बहन अनुराधा भाटिया द्वारा सेमिनार का सारांश प्रस्तुत करने के बाद गुरुदेव ने १२ तारीख को दिये गये अपने समापन भाषण में पहले उठाये गये विषय को फिर से लिया और उन सभी बातों की तरफ संकेत किया जहाँ हमें अपने चरित्र और दृष्टिकोण में सुधार लाने की जरूरत है :

- अपने सामान्य व्यवहार और तौर-तरीकों में भी हमें बदलाव लाना है।
- कष्टों के बिना आध्यात्मिक उन्नति मुमकिन नहीं है। इसीलिये बाबूजी ने कहा है कि हम अपने मिशन में अभ्यासियों को सुख-सुविधायें प्रदान नहीं करते।
- नैतिक पतन के कारण ही एड्स जैसी बीमारियां अपना सिर उठा रही हैं। इसका एकमात्र कारण गोली है जिसने पश्चिमी देशों में स्त्री-पुरुष के सम्बन्धों में से नैतिकता को खत्म कर दिया है।
- वक्ताओं को इस बात का ज़िक्र करना चाहिये था कि इच्छायें ही चरित्र विकास के हमारे प्रयास में बाधक हैं। ये हमारी इच्छा-शक्ति को खत्म कर देती है।
- जो व्यक्ति इस संसार में अपना कोई योगदान नहीं देता और सिर्फ संसाधनों को भोगने की अभिलाषा रखता है, ऐसा व्यक्ति भी अनैतिक होता है।
- यदि आपके पास अपनी ज़रूरत से एक रुपया भी ज़्यादा है, तो आपके पथभ्रष्ट होनी की संभावना अधिक है। हमारे बहुत से अभ्यासी ज़्यादा धन प्राप्त करने के लालच में परेशानी में पड़ गये और भारी नुकसान उठाया।
- हमारे भारत में यौन-नैतिकता पर जरूरत से ज्यादा जोर दिया गया है और अन्य प्रकार की अनैतिकता के प्रति नरम रवैया अपनाया गया है।
- प्रशिक्षकों को, जो मिशन की रक्त-धमनी हैं, अपने आलस्य को त्यागकर अपने काम को निष्ठापूर्वक करना चाहिये तथा गुरुदेव के प्रति ज़्यादा वफादार होना चाहिये।

भाई राजेश राठौड़ ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया तथा बाकी सभी इन्तज़ाम आश्रम मैनेजर भाई सत्यानरायण की निगरानी में बखूबी किये गये। गुरुदेव की चौंका देने वाली वार्ता तथा आत्मावलोकन और परस्पर वार्तालाप से प्रतिभागियों के अन्दर यकीनन, जागृति पैदा हुई होगी।

कुल मिलाकर ये सेमिनार, दिल और दिमाग का गहन मंथन था जिसके हर सत्र को गुरुदेव ने बड़ी उत्सुकता से देखा और सुना।

१४ से १९ अक्टूबर को 'ओशिनिक और लैटिन अमेरिका की सेमिनार' का आयोजन किया गया। गुरुदेव ने अपनी उद्घाटन वार्ता में कहा कि मणपाक्कम में आना, अपनी माँ के घर आने जैसा है। इसकी तुलना आध्यात्मिक घर से करते हुए उन्होंने कहा, "हम यहाँ पर सिर्फ इसलिये आते हैं ताकि हम अपना आत्मिक विकास कर सकें, हृदय को साफ और निर्मल कर सकें और इसे उस मूल स्वरूप में वापस ला सकें जब हृदय प्रेम का प्रतीक हुआ करता था और इसी कारण से यह करुणा, दया,

दूसरों का ध्यान रखना, उनके सुख-दुख बाटँना तथा उनके साथ सामन्जस्य के साथ रहना आदि मानवीय गुणों को प्रकट करता था। ये सभी गुण आज की दुनिया में पूर्णतः विलुप्त हो गये हैं।

६ दिनों में से पाँच दिन गुरुदेव ने सत्संग करवाया। इस दौरान कई शादियां हुईं। भाई कृष्णा ने 'अनेकता में एकता' विषय पर वार्ता दी और भाई सन्तोष कांजी ने 'वे और मैं' पर अपने विचार व्यक्त किये।

शाम के समय गुरुदेव अपने कार्यालय में अलग-अलग समूह में अभ्यासियों से मिले और उन सबके साथ बातचीत करते हुए काफी समय व्यतीत किया। वे न्यूजीलैंड़ और आस्ट्रेलिया की वार्षिक आम सभा की बैठक में भी उपस्थित रहे। कुल मिलाकर ५०० अभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया जिसमें १०० अभ्यासी लैटिन अमेरिका से थे, १५ ला रि यूनियन और बाकी ओशियानिया से थे। गुरुदेव ने हर रोज़ सत्संग करवाया तथा उद्घाटन और समापन के समय वार्तायें दीं।

स्मृति के स्वयंसेवकों की बैठक

२२ अगस्त, २०१० को जबलपुर में म. प्र. ज़ोन के विभिन्न केन्द्रों के लिये स्मृति के स्वयंसेवकों के लिये एक बैठक का आयोजन किया गया। करीब ४५ स्वयंसेवकों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। इसमें भाग लेने वाले स्वयंसेवक इन्दौर, भोपाल, उज्जैन और जबलपुर जैसे बड़े केन्द्रों से ही नहीं थे बल्कि बालाघाट, टीकमगढ़, जौरा, सोहागपुर, गैरासपुर, ट्यूंड़ा, गंजबसौदा, इटारसी, रेवा, नसरुल्लागंज जैसे छोटे और दूर-दराज केन्द्रों से भी आये थे। यह पहला मौका था जब ज़ोनल स्तर पर इस तरह की बैठक का आयोजन किया गया जिसके कारण सभी स्वयंसेवक बहुत उत्साह और जोश से भरे हुए थे।

भाई राजेश रावेरकर ने प्रतिभागियों का स्वागत किया जिसके बाद सबने अपना-अपना परिचय दिया। भाई विनोद ने कार्यक्रम का आरम्भ किया और 'विस्पर्स फ्रॉम द ब्राइटर वर्ल्ड' से एक सन्देश पढ़ा।

प्रस्तुति के बाद वीबीएसई के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा हुई जिसके दौरान इस बात का निर्णय लिया गया कि हर केन्द्र, एक स्कूल का चयन करके वहाँ वीबीएसई को लागू करने का भरसक प्रयास करेगा। युवाओं के लिये इस प्रकार के ज़्यादा कार्यक्रम आयोजित करने की भी आवश्यकता महसूस की गई। सभी प्रतिभागियों ने अपनत्व, भाईचारा और प्रेम-भाव को महसूस किया।

नई नियुक्ति

भाई यू. पी. धवन को १ नवम्बर, २०१० से क्रेस्ट, खड़गपुर के सहायक निदेशक के रूप में नियुक्त किया गया है।

अतीत की एक झलक

सन् १९७६ में मई – जून में गुरुदेव, बाबूजी महाराज के साथ यूरोप के दौरे पर गये जिसमें उन्होंने डेनमार्क, जर्मनी, स्विट्ज़रलैंड, फ्रांस और इटली का दौरा किया। सर्वप्रथम इस यात्रा के बारे में 'सहज मार्ग इन यूरोप' नाम की पुस्तक में छपा था, अब यह 'यात्रा– भाग १' नामक पुस्तक के अन्तर्गत प्रकाशित है।

गुरुदेव ने इस दौरे का बखूबी वर्णन किया है जिसमें बाबूजी महाराज के साथ उनके रिश्ते के सभी रंग दिखाई पड़ते हैं कि किस तरह से गुरुदेव ने बाबूजी महाराज की प्रेमपूर्वक देखभाल की, अथक रूप से मिशन के मामलों को सभाँला, रोज़ १५ से ज़्यादा सिटिंग और उसके साथ–साथ वार्ताएं भी दी। इसमें गुरू और शिष्य के बीच हुई सर्वोच्च स्तर की आध्यात्मिक बातचीत का भी ब्यौरा है।

इस दौरे में बाबूजी महाराज के मुख से निकले कुछ अनमोल रत्न :

"दर्शन, चिंतन का मार्ग है; योग, कर्म का मार्ग है और आत्म– साक्षात्कार मूल स्वरूप में जाने का मार्ग है।"

प्रश्न: हमारे लिये क्या सन्देश है ?
बाबूजी: पूर्ण शान्ति हो और विचारों में कोई विरोधाभास न हो।

प्रश्न: जीवन क्या है?
बाबूजी: जीवन में जीवन ही वास्तविक जीवन है।

एक सूफी शायर सरमद को उद्धरत करते हुए बाबूजी ने कहा:

"प्रेम का दर्द एक तितली की तरह होता है
जो हवा के झोके के साथ
बिना मकसद के इधर–उधर भटकती रहती है।
लेकिन पतंगा अपने आप को लौ पर जला पाता है।

और इसके आगे उन्होंने कहा: "हमारा प्रेम भी ऐसा ही होना चाहिये। अपने ह्रदय में स्थित ईश्वर को पहचानने में हज़ारों साल लग जाते हैं, और तब भी विरले ही यह कर पाते हैं। [नश्वर शरीर की] मृत्यु से पहले मृत होना ही एकमात्र रास्ता है।"

"यह मेरी खोज है कि पापियों के लिये नरक है, बेवकूफों के लिये स्वर्ग है, जबकि दिव्य लोक मुक्त आत्माओं के लिये है।"

मणपाक्कम में जापानी आगुन्तक

एक रोचक वार्तालाप

जापान योग एसोसिएशन के ५० आगुन्तक अपने अध्यक्ष सेन्सई तहारा होड़ो और उपाध्यक्ष ओगियामा किमिको के साथ बाबूजी मेमोरियल आश्रम, चेन्नई में आये और उन्होंने वहाँ कुछ घंटे व्यतीत किये। आश्रम मैनेजर भाई सत्यनारायन ने उन्हें आश्रम दिखाया और उसके बाद 'डी' ब्लॉक में ले गये जहाँ उन्हें विवरण–पुस्तिका दी गई और जापान में रहने वाले प्रशिक्षकों के नाम और सत्संग की जगह का ब्यौरा दिया गया।

इन्टरनेट के माध्यम से नागोया, जापान के प्रशिक्षकों और कार्यकर्ताओं के साथ सम्पर्क स्थापित करने में तकनीक का प्रभावशाली तरीके से उपयोग किया गया। सर्वप्रथम बहन नित्या श्रीराम ने सभी को जापानी भाषा में सहज मार्ग के बारे में बताया। देश–प्रभारी भाई श्रीराम ने जापानी भाषा में अपना परिचय दिया जिसके बाद बहन एरीना नकमुरा, भाई कानै, और बहन क्लैरिसा बेग ने पद्धति और मिशन के बारे में जानकारी दी। जापानी भाषा में दी गई प्रस्तुतियों को आगुन्तकों ने बहुत सराहा। इसमें २,३ लोगों को छोड़कर बाकी सभी महिलायें हैं जो जापान में योग सिखाती हैं।

उसके बाद भाई दुरई ने वार्ता दी और श्री मार्कस ने उसका अनुवाद किया जो टोक्यो से आये हुए भारतीय हैं और इस समूह के संचालक हैं। उनके सेन्सई जो तकरीबन ८० वर्ष की उम्र के हैं, काफी प्रसन्न थे और उन्होंने बताया कि बहुत सालों पहले वे यहाँ पर आ चुके हैं, तब ये कच्चा बना हुआ था।

आगुन्तकों को बताया गया कि वे जब भी चाहें जापान में हमारी सेवा निःसंकोच उपलब्ध कर सकते हैं। चाय और नाश्ते के बाद ६.३० बजे वे जापान वापस जाने हेतु हवाई–अड्डे के लिये रवाना हुए।

तमिलनाडु-दक्षिण ज़ोन

३-६ सितम्बर को भाई ए.पी. दुरई ने तमिलनाडु के कन्याकुमारी और तिरुनलवेली जिले का दौरा किया जिसका उद्देश्य इन जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में मिशन के विकास को बढ़ावा देना था। वड़क्कनकुलम, नांगुनेरी, कोट्टारम जैसे केन्द्रों पर ज़्यादा ध्यान दिया गया जहाँ अभ्यासियों की संख्या बहुत कम थी। कुछ नये स्थान जैसे पनगुड़ी, तोवालै, राधापुरम, चिदंबरपुरम, कोलियंगुलम, मनूर, करैयिरुप्पू जैसे ग्रामीण इलाकों में, जहाँ नये केन्द्रों के बनने की सम्भावना है, उन स्थानों पर भी विशेष ध्यान दिया गया। भाई दुरई ने नये लोगों तक पहुँचने के लिये घरों में आयोजित सभाओं और सार्वजनिक सभाओं का सहारा लिया। उन्होंने इस बात पर गौर किया कि अभ्यासी गुरुदेव का काम आगे बढ़ाने की पहल नये लोगों को लाकर करते हैं जिनको वे पहले से ही जानते हैं और जिनमें सहज मार्ग के प्रति थोड़ा भी झुकाव है।

३ सितम्बर को उन्होंने नागरकोइल के उपकेन्द्र कन्याकुमारी और कोट्टारम में सार्वजनिक सभा का आयोजन किया, जो हाल ही में विकसित हुए हैं। उसके बाद वे नागरकोइल ध्यानकक्ष में गये और उपस्थित अभ्यासियों को 'गुरुदेव के साथ एकाकार स्थापित करना' विषय पर वार्ता देने के लिये आमन्त्रित किया। उसके बाद वे नागरकोइल से १० किमी दूर तोवालै नामक स्थान पर एक घर में आयोजित सभा में शामिल हुए। प्रशिक्षकों द्वारा दी गई प्रस्तुति में आगुन्तुक पूरी तरह से लीन थे।

४ तारीख को नांगुनेरी केन्द्र तथा राधापुरम् क्षेत्र में घर पर एक सभा आयोजित की गई। उसके बाद वे कोलियंगुलम में एक घर में गये जहाँ आस-पड़ोस के लोग एकत्रित हुए थे, वार्ता सुनने के बाद उन सबने साधना शुरू करने की इच्छा ज़ाहिर की। रात को वड़क्कनकुलम वापस आने के बाद उन्होंने सत्संग करवाया तथा साधना से सम्बन्धित अभ्यासियों के प्रश्नों के उत्तर दिये।

रविवार ५ तारीख को भाई दुरई ने वड़क्कनगुलम केन्द्र में पूर्णदिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया जिसमें तिरुनेलवेली, कोट्टारम, नागरकोइल केन्द्रों से करीब ५० अभ्यासियों ने भाग लिया। सत्संग के बाद अभ्यासियों ने वार्तायें दी, प्रशिक्षकों ने स्पष्टीकरण दिये, सामूहिक चर्चायें हुईं, डीवीडी के ज़रिये गुरुदेव की वार्तायें दिखाई गईं और गुरुदेव की शिक्षा पर प्रस्तुतियां दी गईं। तत्पश्चात एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें २५ आगुन्तुकों में से १२ ने साधना शुरू करने के लिये अपना नाम दिया।

६ तारीख को तिरुनेलवेली आश्रम का दौरा करने के बाद उन्होंने मनूर और कुडियिरुप्पु गाँव में घर पर एक सभा का आयोजन किया।

अपने इस दौरे में उन्होंने निम्नलिखित चीजों पर गौर किया:

- गुरुदेव द्वारा बोई हुई फसल कटाई के लिये तैयार है और उसके लिये ज़्यादा काम करने वालों की, खासकर प्रशिक्षकों की आवश्यकता है जो बाहर के केन्द्रों में जाकर नये केन्द्रों को विकसित कर सकें और जब तक वे केन्द्र आत्म-निर्भर नहीं हो जाते तब तक उनका ध्यान रखें।
- नये अभ्यासियों को हर हफ्ते व्यक्तिगत सिटिंग लेनी चाहिये।
- प्रशिक्षकों को चाहिये कि वे नये अभ्यासियों को पद्धति के बारे में सही जानकारी दें।
- सार्वजनिक सभायें व घरों में आयोजित सभाएं जैसी गतिविधियां अभ्यासियों और प्रशिक्षकों में एकता व भाईचारे की भावना उत्पन्न करती हैं और इस तरह के अवसरों पर बहुत उत्साह देखा जाता है। जब हम गुरुदेव के कार्य में संलग्न होते हैं, पूरे समय हमें उनकी उपस्थिति महसूस होती है।

इस दौरे के तुरन्त बाद १०-१२ सितम्बर को तमिलनाडु-दक्षिण ज़ोन के प्रभारी भाई टी. वी. विश्वनाथ राव ने विरुदुनगर, टूटीकूरिन, तिरुनेलवेली जिलों में विभिन्न केन्द्रों का दौरा किया।

१० तारीख को उन्होंने चिन्न वल्लिक्कुलम आश्रम में विरुदुनगर, अरुप्पुक्कोट्टे, करियपट्टी केन्द्रों से आये हुए अभ्यासियों को सत्संग करवाया। अभ्यासियों द्वारा परिचय दिये जाने के बाद उन्होंने उन सभी से दोपहर तक बातचीत की।

बाद में कोविलपट्टी में करीब २० अभ्यासियों ने सत्संग में भाग लिया जिसके बाद साधना से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गये।

११ तारीख की सुबह वे अरुप्पुक्कोट्टाई उपकेन्द्र में गये, सत्संग कराया और वहाँ पर उपस्थित २५ अभ्यासियों से बातचीत की। उसी शाम को श्रीविल्लिपुत्तूर में उन्होंने २५ अभ्यासियों को सत्संग करवाने के बाद बातचीत की। सभी अभ्यासियों ने आश्रम के लिये एक जमीन खरीदने में रुचि दिखाई।

१२ सितम्बर को उन्होंने राजपालयम में ७० अभ्यासियों को रविवार का सत्संग करवाया। उसके बाद आधे दिन का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें चरित्र निर्माण व पद्धति पर चर्चा हुई।

दोपहर में वे तिरुनेलवेली जिले में स्थित तेनकाशी पहुँचे और शाम के समय उन्होंने पुलियनगुडी और कडैयनल्लूर उपकेन्द्र के आसपास के केन्द्रों से आये अभ्यासियों को भी सत्संग करवाया। अभ्यासियों ने बताया कि उन्होंने सहज मार्ग के बारे में क्या समझा है तथा अभी तक उन्होंने अपने अन्दर क्या बदलाव पाये हैं।

चर्चा के बाद भाई टी.वी. विश्वनाथ, पुलियनगुडी उपकेन्द्र गये जहाँ इस समय ३५ अभ्यासी हैं। वहाँ से उन्होंने तिरुप्पूर के लिये प्रस्थान किया।

Vadakkankulam

Nanguneri

जबलपुर में ज़ोन के प्रशिक्षकों की बैठक

२१ एवं २२ अगस्त २०१०

बैठक की शुरुआत में प्रशिक्षकों को हाल ही में जारी की गई डी. वी. डी. दिखाई गई। भाई सचिन सिन्हा ने जी. आई. एस. नक्शा प्रस्तुत किया जिसमें मध्य प्रदेश के अभ्यासियों तथा आश्रमों की संख्या को दर्शाया गया था। भाई डॉ. एन. वी. देशपांडे ने काफी मनन–चिंतन के बाद तैयार की गई वार्ता में कहा कि किस प्रकार प्रशिक्षकों को कार्य करने के लिये पहले क्षमता प्रदान की जाती है, तब हम काम करते–करते सीखते हैं और विकसित होते हैं, जो कि सामान्य तरीके से एकदम अलग है जिसमें पहले सिखाया जाता है। यह सहज मार्ग की विशेषता है।

सभी प्रतिभागियों के सामने चर्चा करने के लिये दस नियमों से सम्बन्धित प्रश्न रखे गये। कुछ प्रशिक्षकों ने अपने अनुभव दूसरों के साथ बाँटे। उसके बाद प्रश्न–उत्तर सत्र हुआ, खेल क्रीड़ा हुई तथा डी. वी. डी. दिखाई गयी।

दूसरे दिन फिर डी. वी. डी. चलाई गयी। ज़ोन में कार्यरत प्रशिक्षकों के आँकड़े बताये गये। इसके बाद जोनल निबन्ध संयोजक भाई नवीन मिश्रा ने ब्यौरा देते हुए कार्य– प्रणाली का वर्णन किया तथा सभी के साथ अपने अनुभव बाँटे।

दोपहर के भोजन के पश्चात आयोजित सत्र में भाई आनन्द परमार ने "ई–मेल एवं मिशन वेबसाइट का परिचय " के बारे में एक सरल वार्ता प्रस्तुत की, जिससे सब लाभान्वित हुए। यह पाया गया कि ५० प्रतिशत अभ्यासी मिशन की वेबसाइट से अनभिज्ञ हैं। भाई सचिन सिन्हा ने "गुरुदेव को अपने अन्तःकरण में देखें" विषय पर वार्ता दी। म.प्र. जोन के लिये '२०११ का सपना' पर ज़ोन–प्रभारी द्वारा एक प्रस्तुति दी गई जिसमें उस योजना पर काम करने के १० तरीके शामिल थे।

म.प्र. ज़ोन की गतिविधियों के संयोजक भाई राजेश रावलकर ने स्वयंसेवकों एवं 'स्मृति' के संयोजकों के साथ हुई एक बैठक का ब्यौरा प्रस्तुत करते हुए सूचित किया कि अगले वर्ष होने वाली गतिविधियों की सारणी बनकर तैयार हो चुकी है जो सभी लोगों को भेज दी जायेगी। जबलपुर के केन्द्र– प्रभारी भाई आनन्द ने सभी को वहाँ आने के लिये धन्यवाद देते हुए उनका आभार प्रकट किया और विशेषरूप से उन्होंने जबलपुर केन्द्र के अभ्यासियों को इस कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिये धन्यवाद दिया। लगभग ५५ प्रशिक्षक एवं ५० स्वयंसेवकों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

केन्द्र–प्रभारी तथा प्रशिक्षक–प्रभारी की बैठक

(तमिलनाडु– उत्तरी ज़ोन)

११ सितम्बर को तमिलनाडु, अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह के ५२ प्रतिभागी मणपाक्कम आश्रम, चेन्नई में एकत्रित हुए। कार्यक्रम का आरम्भ भाई ए. पी. दुरई (संयुक्त सचिव) और भाई एस. प्रकाश (ज़ोन–प्रभारी) की वार्ता से हुआ।

अभ्यासियों को पहले से ही समूह में विभाजित कर दिया गया था तथा विषय भी पहले से ही दे दिये गये थे ताकि सभी प्रतिभागी तैयारी के साथ आ सकें। विषय इस प्रकार से थे –"अभ्यासियों की आध्यात्मिक उन्नति के लिये कार्य–योजना,""केन्द्र के विकास को बनाये रखना," "अभ्यासियों का चरित्र–परिवर्तन" तथा "मूल्य आधारित शिक्षा के द्वारा युवाओं पर ज्यादा ध्यान देना"। वार्तालाप के दौरान निम्नलिखित बातें मुख्यतः उभर कर आईं – मिशन के साहित्य को पढ़ने का महत्व, स्वयंसेवक कार्य के द्वारा सेवा, आन्तरिक उपासना, नैतिक मूल्य, दूसरों के लिये प्रार्थना करना, अच्छा वातावरण पैदा करना, अभ्यासी का मालिक से भली–भाँति परिचय कराना, अनुशासन, सतत–स्मरण और प्रेमपूर्वक अभ्यास करना, भावना एवं अनुभूति के बीच अन्तर सीखना, मिलजुल कर कार्य करना इत्यादि। यह सीखने का एक अच्छा मौका था जिसमें चिंतन करने के लिये और लागू करने के लिये बहुत सी नई बातें थी।

वेल्लोर के हब–प्रभारी भाई लक्ष्मीनारायण ने व्यक्तिगत सिटिंग के महत्व के बारे में एक वार्ता दी तथा प्रशिक्षकों को बाहर के केन्द्रों का दौरा करने के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने इस बात का ज़िक्र किया कि ए.टी.पी. के ज़रिये सभी केन्द्रों में बहुत बदलाव आया है तथा यह राय दी कि हब स्तर पर सभायें की जायें एवं नये सम्भावित केन्द्रों पर ध्यान दिया जाये।

स्मृति, सदस्यता, प्रकाशन एवं वाणिज्य जैसे मुख्य विभागों ने प्रत्येक विभाग में किये जा रहे कार्यों का ब्यौरा दिया तथा यह भी स्पष्ट किया कि इस मामले में केन्द्रों से क्या उम्मीद की जाती है।

भाई एस. प्रकाश ने अपनी समापन टिपण्णी में कार्य–योजना को अन्जाम देने के १० तरीकों को फिर से प्रस्तुत किया जिसका उन्होंने पहले भी ज़िक्र किया था। ये बिन्दु इस प्रकार थे – सभी केन्द्रों में ए.टी.पी. और सार्वजनिक सभाओं का आयोजन, स्वागत कक्ष, व्यक्तिगत साधना एवं सिटिंग पर ध्यान देना, प्रशिक्षकों के क्षेत्रों की अदला–बदली, रविवार की गतिविधियाँ, नये केन्द्रों का विकास, भण्डारे में भाग लेना, युवा विकास, मण्पाक्कम आश्रम में जाना एवं मिशन के साहित्य का प्रभावकारी तरीके से उपयोग करना। इसके बाद प्रतिभागी मालिक से मिले तथा मालिक ने उन सबसे कहा, "इसके बाद अच्छा काम करो!"

अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम

इलाहाबाद

रांची

स्मृति द्वारा तैयार किये गये 'अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम' भारत के सभी केन्द्रों में आयोजित किये जा रहे हैं। अभ्यासियों का कहना है कि इससे उन्हें पद्धति की सही जानकारी मिलती है तथा यह कार्यक्रम उन्हें नियमित व अथक रूप से अभ्यास करने के लिये उनमें फिर से जोश भर देता है। इसमें सहज मार्ग साधना के सभी पहलू सुचारू रूप से समझाये जाते हैं तथा दैनिक अभ्यास से सम्बन्धित बहुत सी शंकाओं का निवारण किया जाता है। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सभी ने उत्साहपूर्वक स्वागत किया। ज्यादातर अभ्यासियों ने इस बात को महसूस किया कि मालिक की ऑडियो–वीडियो पर चलाई गई वार्ताओं के ज़रिये उनकी साधना से सम्बन्धित ज्यादातर सवालों का स्पष्टीकरण हो गया। अभ्यासियों ने इस बात का ज़िक्र किया कि इस कार्यक्रम के द्वारा उन्हें डायरी–लेखन, मिशन के साहित्य को नियमित रूप से पढ़ना व सत्संग में नियमित रूप से उपस्थित होना, आदि के महत्व के बारे में ज्यादा जानकारी मिली।

केन्द्र	तारीख	भागीदार केन्द्र	आयोजक
सत्यामन्गलम	२९ अगस्त	सत्यामन्गलम, पुलियम्पट्टी और अन्नूर केन्द्र	भाई अशोकन और भाई अन्नादुरई और कोयम्बतूर केन्द्र के भाई पलानी कुमारन द्वारा संचालित
के. जी. एफ़. केन्द्र	५ सितम्बर	के. जी. एफ़., मुलबागल और कुप्पम(आ.प्र.)	मैसूर के भाई शशि कांत और भाई श्रीधर
जमशेदपुर	१८ सितम्बर		बहन अनुसुय्या रामचन्द्रन
ऊना – हि.प्र	.३ अक्टूबर	ऊना और बजौरा (कुल्लु) तथा पालमपुर जैसे आसपास के केन्द्र	जम्मू से ए.टी.पी. का दल
मुम्बई	१४–अगस्त		भाई मनि
नन्देड	२२ अगस्त		चिकाली केन्द्र से डॉ परिहार और डॉ चौधरी
सेडम, गुलबर्गा	५ सितम्बर		
रायचूर, उत्तरी कर्नाटक	१२ सितम्बर		भाई प्रहलाद पकनिकर
गुलबर्गा	१९ सितम्बर		भाई निजलिंगप्पा और भाई महेश देशपान्डे
करनूल	२२ अगस्त		
अनन्तपुर	२९ अगस्त		
नन्दयाल	१२ सितम्बर		
कड्डप्पा	१९ सितम्बर		
हिन्दूपुर	१० अक्तूबर		स्मृति चौबे, बहिन नीरा वर्मा, बहिन इन्दू पान्डेय और भाई अतुल जैन
राँची	२ अक्टूबर		
विरुदुनगर	२६ सितम्बर	विरुदुनगर, श्री बिल्लिपुथुर, शिवकाशी एवं कोविलपट्टी	भाई बालासुब्रमणियम
राँची	२६ सितम्बर	बिहार एवं झारखंड	बहन अनुसुय्या रामचन्द्रन

विरुदुनगर

अनन्तपुर

सेडम

अलुवा में क्षेत्रीय सेमिनार

१०-१२ सितम्बर, २०१० को अलुवा के ज़ोनल आश्रम में एक तीन दिवसीय क्षेत्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया जिसमें अलुवा और समीप के ७ केन्द्रों और उप-केन्द्रों से लगभग २३० अभ्यासियों ने भाग लिया।

इस सेमिनार का प्रारंभ सत्संग के साथ हुआ। पहले सत्र में स्मृति द्वारा तैयार की गई सी.डी. पर आधारित अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया गया। दोपहर के भोजन के बाद के सत्र में अभ्यासियों द्वारा तैयार की गयी प्रस्तुतियों पर चर्चा हुई। तिरुप्पूर के भाई एन. प्रकाश ने सेमिनार के संदर्भ में एक छोटा सा भाषण दिया तथा उसके बाद सतसंग करवाया। बाद में अनौपचारिक बातचीत के दौरान उन्होंने बताया कि केरल में सहज मार्ग के विकास से गुरुदेव प्रसन्न हैं।

११ तारीख की सुबह ६.३० बजे प्रशिक्षकों के सत्संग के बाद ९.०० बजे सामान्य सत्संग था। भाई प्रकाश ने एक ज्ञानवर्द्धक प्रस्तुति दी जिसका सार था – मालिक को देखो, उनका आज्ञापालन और अनुकरण करो। डॉ. सी. सतीसन ने इस भाषण का मलयालम में अनुवाद किया। दोपहर के भोजन के बाद अभ्यासियों नें इस प्रस्तुति पर अपने विचार प्रकट किये। ज़ोनल प्रभारी भाई के. यू. मोहन ने स्थानीय लोगों के लिये एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया। १२ सितम्बर को सुबह ७.३० बजे के सत्संग के बाद भाई प्रकाश और सुंदरम ने लघु वार्ताएं दी, और इसके साथ ही इस सेमिनार का समापन हुआ।

इलाहाबाद

इलाहाबाद केन्द्र ने १५ अगस्त, २०१० को हिंदी में ए.टी.पी का आयोजन किया जिसमें इलाहाबाद और झांसी केन्द्रों के लगभग ३५ प्रतिभागियों ने भाग लिया। केन्द्र-प्रभारी भाई त्रिवदी ने स्वागत भाषण दिया। बहन ललिता शर्मा और स्वंयसेवकों की टीम द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम का उद्घाटन भाई उमाशंकर बाजपेयी ने किया। हर सत्र के बाद प्रश्नोत्तर हुये। इसी केन्द्र में ५ सितम्बर को एक और ए.टी.पी का आयोजन किया गया, जिसमें इलाहाबाद, झूसी, बांदा, थरवाई और बम्पुर केन्द्रों से आये ३६ प्रतिभागियों ने भाग लिया।

तिरुप्पूर, तमिलनाडु (दक्षिण)

२५ सितम्बर को राष्ट्रीय सेवा योजना के तहत तिरुप्पूर के डायमंड जुबली पार्क में एक ६-दिवसीय कैम्प का आयोजन किया गया जिसमें के.एस.सी स्कूल के २५ छात्रों ने हिस्सा लिया। छात्रों ने आश्रम के रख-रखाव के कार्य में हिस्सा लिया और हर दोपहर २.३० बजे उन्हें "अनुशासन" और "चरित्र निर्माण" पर आधारित गुरुदेव के विचारों से अवगत कराया जाता था।

३ अक्टूबर (रविवार) को चेट्टिपालयम योगाश्रम, तिरुप्पूर में एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया गया जिसमें ४५ लोगों ने भाग लिया। सत्संग के बाद ज़ोनल प्रभारी भाई टी.वी.विश्वनाथ राव ने प्रतिभागियों का स्वागत किया। केन्द्र प्रभारी भाई आर. शनमुगम और भाई एन.पी.प्रकाश ने सहज मार्ग पद्धति के बारे में विस्तार से समझाया। २२ लोगों ने साधना शुरू करने की इच्छा ज़ाहिर की और उसी दिन उन्होंने अपनी पहली सिटिंग ले ली।

रायपुर

२३ सितम्बर को रायपुर केन्द्र ने "जवानों के दैनिक जीवन में ध्यान" विषय पर एक सार्वजनिक सभा का आयोजन इस पते पर किया: ६५, बी.एन, सी.आर.पी.एफ़ मुख्यालय, बरदेरा कैम्प। इस कार्यक्रम की पहल भाई संदीप दत्ता द्वारा की गई जो रायपुर सी.आर.पी.एफ़ के डी.आई.जी.पी हैं।

बहन रजनी दत्ता ने मानव मन की अस्थिरता की तुलना एक झूलती हुई गेंद से करते हुए इस अस्थिरता को कम करने की जरूरत पर बल दिया। भाई दीपक त्यागी ने जवानों के दैनिक जीवन में ध्यान की भूमिका के बारे में बताया। उन्होंने ध्यान के महत्व के बारे में बताते हुए कहा कि ये न सिर्फ़ हमें 'परम' से जोड़ता है, बल्कि हमें आत्मिक संतुष्टि भी प्रदान करता है एवं हम आसानी और खुशी से अपने परिवार और देश का ख्याल रख सकते हैं। भाई त्यागी ने जवानों के प्रश्नों का उत्तर दिया। ज्यादातर समस्यायें तनाव, काम का दबाब, अनजाना भय, निराशा, नींद की कमी इत्यादि से संबंधित थी। भाई त्यागी ने ध्यान की क्षमता पर बल देते हुए कहा कि यह एक अनूठी पद्धति है जो इन सारी समस्याओं का निर्वाण है।

वी.बी.एस.ई. पर आधारित सेमिनार एवं कार्यशाला– अलुवा, केरल

२९ अगस्त को अलुवा केन्द्र ने कक्षा ५–१० के छात्रों के लिये वी.बी.एस.ई. पर आधारित एक सेमिनार का आयोजन किया । केरल ज़ोनल आश्रम में आयोजित इस सेमिनार का उद्घाटन राजश्री विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती सुजन ज़ोन ने किया जिसमें अलग–अलग स्कूलों से ४५ छात्रों ने भाग लिया । छात्रों के लिये पाठन प्रतियोगिता व भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई और कार्यक्रम के अन्त में एक प्रश्नोतरी सत्र रखा गया । बच्चों और अभिभावकों की प्रतिक्रिया बहुत उत्साहजनक और प्रेरणादायक थी। प्रधानाचार्या महोदया ने उनके विद्यालय के शिक्षकों के लिये भी एक कार्यशाला आयोजित करने का आग्रह किया । तदानुसार, २५ सितम्बर को राजश्री विद्यालय, कडुंगल्लूर में शिक्षकों के लिये एक वी.बी.एस.ई. की कार्यशाला आयोजित की गई। भाई ए.माधवन, भाई टी.पी. नारायणन, भाई ए. जयप्रकाश एवं भाई विजयकृष्णन ने इस कार्यक्रम में अपनी वार्ताएँ दीं।

वी.बी.एस.ई. –गुजरात

बड़ौदा केन्द्र के भाई विलास भोंडे को दक्षिण गुजरात जोन के लिये वी.बी.एस.ई का संयोजक नियुक्त किया गया। पूरे गुजरात में शिक्षकों को वी.बी.एस.ई पाठ्यक्रम की प्रस्तुति और प्रशिक्षण देने हेतु स्वयंसेवकों के कई दल तैयार किये जा रहे हैं । बड़ौदा, वापी, भावनगर, अहमदाबाद, सूरत, आनंद, दमन, नवसारी, वलसाड, भुज़, ज़ामनगर एवं राजकोट केन्द्रों में स्कूलों से सम्पर्क किया जा रहा है, कार्यक्रम में उपयोग आने वाली सामग्री तैयार की जा रही है तथा स्वयंसेवकों को प्रशिक्षण तथा अभ्यासियों की जागरुकता हेतु उन्हें इस बात की जानकारी दी जा रही है।

कुछ स्कूलों में भी वी.बी.एस.ई. के पाठ्यक्रम की शुरुआत हो गई है। स्मृति के नये पाठ्यक्रम पर आधारित होने के कारण प्रतिभागियों में जिज्ञासा और भी बढ़ गई है । शिक्षकों ने इस कार्यक्रम का भरपूर आनंद उठाया । इसमें प्रयोग की गई रचनात्मक सामग्री जैसे बॉडी कट–आउट, फ़्लैश कार्ड, पी.पी.टी, खेल, लघु फिल्म एवं सामूहिक परिचर्चा ने सभी का ध्यान विशेष रूप से आकर्षित किया।

ऐसा निर्णय किया गया कि हर अर्ध दिवस कार्यक्रम में अभ्यासियों के लिये विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जायेगा जिससे उनको "नवरत्न" को आत्मसात करने में मदद मिलेगी।

वर्तमान योजना के अनुसार १० केन्द्रों के १३ स्कूलों में वी.बी.एस.ई को परिक्षण परियोजना के रूप में गुजरात के दोनों ज़ोन में लागू किया गया है। बहन तारा चौहान एवं उनके दल की सहायता से पाठ्यपुस्तकों का गुजराती में अनुवाद किया जा रहा है।

कनकपुरा, दक्षिण कर्नाटक:

कनकपुरा लायन्स कल्ब के सदस्य भाई स्वामी व भाई वेंकटेश के सहयोग से वी.बी.एस.ई. पर आधारित एक सेमिनार का आयोजन किया गया। १३ सिंतम्बर को लायन्स हायर प्राइमरी स्कूल एंव हंसवाहिनी हायर प्राइमरी स्कूल में शिक्षकों के लिये एक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित हुआ जिसमें ३६ शिक्षकों ने भाग लिया।

सत्र की संचालिका बहन माधुरी ने इस कार्यक्रम की शुरुआत ५ मिनट की मौन प्रार्थना से की । उन्होनें श्री राम चन्द्र मिशन का संक्षिप्त परिचय देने के बाद अन्य विषयों पर भी वार्ता दी जैसे "मूल्य क्या हैं", "मूल्यों का महत्व", शिक्षकों एवं माता–पिता की भूमिका", बच्चों को उचित माहौल देना इत्यादि। खेल–कूद, सामूहिक परिचर्चा को भी इस सत्र में शामिल किया गया था । सभी प्रतिभागियों में उत्साह साफ झलक रहा था । शिक्षकगण वी.बी.एस.ई को अपनी कक्षा में लागू करने के दृढ़ विश्वास के साथ वापस लौटे ।

वी.बी.एस.ई, कनकपुरा के दल के सदस्य इन स्कूलों में नियमित रूप से जायेंगे तथा शिक्षकों से अनौपचारिक चर्चा कर यह पता करेंगे कि इस कार्यक्रम को लागू करने के लिये उन्हें किसी अन्य सहायता की आवश्यकता तो नहीं है व इसके बारे में उनका मत जानने का प्रयास करेंगे।

राँची

"वह ज्ञान जो सिर्फ ज्ञानार्जन हेतु बना हो, जिस ज्ञान से उसके साथियों को फायदा न हो, ऐसा ज्ञान पूर्ण विराम की तरह होता है और वह सिर्फ अधूरी निराशा की अंधी गली की ओर ले जाता है। शिक्षा एक अर्थहीन प्रथा है जब तक कि यह विद्यार्थी के चरित्र को सही साँचे में नहीं ढालती और उनमें जीवन मूल्यों का समावेश नहीं करती । शिक्षण–संस्थानों को यह सुनिश्चित करना होगा कि भारतवर्ष में हर एक विद्यार्थी इतना शिक्षित हो कि उसे भारत वर्ष को एक अद्वितीय राष्ट्र बनाने के लिये जिस चीज की भी ज़रूरत हो, चाहे वह शारीरिक हो या मानसिक, उसे प्रदान की जाये। हमें अपनी प्राचीन विरासत पर गर्व है और हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हमारा भविष्य भी इससे कम गौरवशाली न हो"।
डॉ. (श्रीमती) सरला बिरला

वहाँ की संस्थापिका श्रीमती सरला बिरला द्वारा दिये गये मूल्यों को आधार बनाते हुए राँची के वी.बी.एस.ई स्वंयसेवकों ने नवीन पाठ्यक्रम तथा उसकी आवश्यकता को एक आकर्षक तरीके से ५० शिक्षकों के समक्ष पेश किया । ४ घंटे तक चले इस लम्बे कार्यक्रम को सभी श्रोताओं ने बड़े चाव से सुना और सराहा।

स्कूल "स्मृति" के साथ इस मामले पर आगे बात करने के लिये तैयार है कि वे स्मृति के साथ अपने पाठ्यक्रम को मिलाकर किस प्रकार कार्य कर सकते हैं ।

स्वयंसेवक सुनंदा चौहान, अनिता तिवारी, शीतल चौहान, अनुराधा चौहान, संगीता सोमानी, मनोज तिवारी, डॉ. श्याम नारायण, रामवतार साहू, शोभा साहू, अरुण कुमार लाल ने इस कार्यक्रम को आयोजित करने में सहभागिता दिखाई।

युवाओं और विद्यार्थियों में उत्साह का संचार करना

अहमदाबाद सेमिनार

निरमा विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के कुछ प्रशिक्षुओं की नजर एस.आर.सी.एम के साइन–बोर्ड पर पड़ी, जिस पर लिखा था– "ध्यान के द्वारा मन का विनियमन"। वे मिशन के बारे में ज़्यादा जानने के लिये बहुत उत्सुक थे । उनकी उत्सुकता को देखकर वहाँ के केन्द्र–प्रभारी भाई जिगनेश ने अद्लज आश्रम में १९–२३ वर्ष की आयु के प्रतिभागियों के लिए २ अक्टूबर,२०१० को ९० मिनट का सेमिनार आयोजित किया ।

जिज्ञासुओं को उनके स्थाई निवास–स्थान (वे जहाँ के रहने वाले हैं, उस जगह) के केन्द्र–प्रभारी का पता दिया गया। यह बहुत ही रोचक घटना थी जब मिशन के साइन–बोर्ड को देखकर जिज्ञासु मिशन की तरफ आकर्षित हुए ।

सिद्धिपेट, आन्ध्र प्रदेश

हाल ही में एस.आर.सी.एम द्वारा आयोजित 'निबंध लेखन कार्यक्रम' के विचार–उत्प्रेरक विषयों से प्रेरित होकर, गवरमेंट डिग्री कॉलेज फॉर वूमेन, गजवेल, आन्ध्र प्रदेश के प्रधानाध्यापक डॉ. वेन्कट रमन ने सिद्धिपेट केन्द्र से स्नातक छात्र–छात्राओं के लिए "मन के विनियमन" पर एक सेमिनार आयोजित करने का आग्रह किया।

६ अक्टूबर, २०१० को आयोजित इस सेमिनार में तकरीबन ८० विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षकों ने "ध्यान के द्वारा मन का विनियमन" एवं "जीवन के पूवार्ध में लक्ष्य को निर्धारित करने की आवश्यकता" जैसे विषयों पर वार्ता दी।

खानापुर, उत्तर कर्नाटक

खानापुर, कर्नाटक में स्थित मराठा मंडल आर्ट्स एंड साइंस कॉलेज, बेलगाम में ९ सितम्बर को प्रादेशिक स्तर पर एक सेमिनार आयोजित की गई जिसका शीर्षक था–"वर्तमान परिदृश्य में उच्च शिक्षा के दौरान आध्यात्मिक साधना का महत्व" । इस कार्यक्रम में भाग लेने तथा विद्यालय की स्मारिका में लेख प्रकाशित करने हेतु श्री राम चन्द्र मिशन को आमंत्रित किया गया । पूरे प्रदेश से तकरीबन १५० प्रतिभागी एवं विद्यार्थियों ने इस कार्यक्रम मे भाग लिया ।

भाई राजू काशिमपुरकर ने मिशन का प्रतिनिधित्व किया और " वर्तमान परिपेक्ष्य में आध्यात्मिकता का महत्व", "जीवन का वास्तविक लक्ष्य", "युवाओं के अनुकूल आध्यात्मिक साधना" जैसे विषयों पर वार्तायें देते हुए उनके विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। अन्त में इच्छुक प्रतिभागियों को मिशन का विवरण–पत्र दिया गया ।

अग्रिम युवा गोष्ठी , बैंगलोर

१०–१२ सितम्बर को बैंगलोर में तीन दिवसीय आवासीय युवा गोष्ठी आयोजित की गई जिसका विषय था: "हम – आने वाला कल"। इसका मुख्य उद्देश्य था कि ज़ोन के युवाओं को एक ऐसा मंच देना जिससे वे साधना के विभिन्न अंगों को बेहतर समझ सकें जैसे दस नियम, बदलाव लाने में प्रतिरोध, लक्ष्य को अपनाना , अहम् की चुनौती, नि:स्वार्थ सेवा, भविष्य की जिम्मेदारियाँ इत्यादि । इस सेमिनार में २० से ३५ आयु वर्ग के ३१ अभ्यासी शामिल हुए जो कि तीन वर्ष से अधिक समय से सहज मार्ग में हैं।

युवाओं से बातचीत करके विषयों को सेमिनार से पहले ही निर्धारित कर लिया गया था । संयोजकों ने इस कार्यक्रम का बखूबी आयोजन किया जिसमें उन्होंने सैद्धांतिक पहलुओं को गुरुदेव के सानिध्य से अर्जित अपने अनुभव के व्यावहारिक ज्ञान से प्रमाणित किया ।

कार्यक्रम के बारे में अभ्यासियों की प्रतिक्रिया उत्साकवर्द्धक थी । कुछ अभ्यासियों के अनुसार उनको पहली बार दिल और दिमाग में अंतर समझ में आया एवं अन्य ने कहा कि उन्होंने साधना में नियमित होने का संकल्प लिया है तथा इस कार्यक्रम के माध्यम से उन्हें सहज मार्ग के विभिन्न पहलुओं को बहुत गहराई से समझने का मौका मिला है ।

मैंगलोर, दक्षिण कर्नाटक

१८ सितम्बर को श्रीनिवास इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमैंट, मैंगलोर में एस.आर.सी.एम ने एक सार्वजनिक सभा का आयोजन किया । भाई प्रसाद कृष्णा ने 'अतिथि भाषण काल' में इस कार्यक्रम का संचालन किया जिसमें एम.बी.ए के १२० विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया । उन्होंने "ध्यान से मन का विनियमन" विषय पर वार्ता दी व श्री राम चन्द्र मिशन और पद्धति का संक्षिप्त विवरण दिया । भाई कृष्णा ने "जीवन में लक्ष्य की महत्ता' तथा "समय का सदुपयोग" पर प्रकाश डालते हुए श्रोताओं को सहज मार्ग पद्धति को आजमाने का आमंत्रण देते हुए कहा कि हमें वर्तमान क्षण को उद्देश्यपूर्ण और प्रभावशाली बनाना चाहिये । इस कार्यक्रम से वहाँ के प्रधानाध्यापक एवं उप–प्रधानाध्यापक बहुत खुश थे तथा १६ विद्यार्थियों ने मिशन से जुडने की इच्छा ज़ाहिर की तथा अपने नाम दिये।

Khanapur

Bangalore

प्रकाश के केन्द्र

सोनीपत, हरियाणा

सोनीपत आश्रम फ़ाजिलपुर पॉवर हाउस के पास सेक्टर १२, विभाग ४ में स्थित है जो सोनीपत-बहालगढ़ सड़क से लगा हुआ है। यह सोनीपत रेलवे स्टेशन से ४ किमी और बस स्टैंड से ३ किमी की दूरी पर है। नई दिल्ली -चंडीगढ नेशनल हाईवे न. १, बहालगढ़ चौक यहाँ से सिर्फ़ ५ किमी दूर है। सन् २००३ में हरियाणा शहरी विकास प्राधिकरण ने ११४० वर्ग मीटर की जगह दी थी जिसकी पूरी कीमत चुकाने में सोनीपत केन्द्र के अभ्यासियों का बहुत बड़ा योगदान रहा । ५ दिसम्बर २००३ को मालिक ने यहाँ भूमि-पूजा की ।

९ अक्टूबर २००५ को आश्रम का निर्माण-कार्य शुरू हुआ और सोनीपत केन्द्र के सबसे छोटे अभ्यासी ने यहाँ का शिलान्यास किया । यह आश्रम अक्टूबर २००७ में बनकर तैयार हो गया। सोनीपत केन्द्र के अभ्यासियों ने सामान तथा स्वयंसेवक के रूप में दिल खोलकर अपना योगदान दिया जिसके कारण निर्माण की कीमत बहुत कम हो गयी थी।

२ फ़रवरी २००९, बसंत पंचमी के दिन आश्रम में पहला सत्संग रखा गया। आश्रम का उद्घाटन ७ फ़रवरी २००९ को मालिक के हाथों से हुआ। इस अवसर पर बोलते हुए मालिक ने कहा " अगर ईश्वर का कोई धर्म है या वे कुछ कहना चाहते हैं या अपने आप को प्रकट करना या दिखाना चाहते हैं, तो ईश्वर प्रेम है। तो जब हम प्रेम करना सीख जाते हैं, तब हम ईश्वर जैसे बन जाते हैं।"

आश्रम की पहली मंजिल ४१६२ वर्ग फ़ुट में और दूसरी मंजिल ४०२७ वर्ग फ़ुट में बनी हुई है। पहली मंजिल में दो डॉरमेट्री बनी हुई हैं जिनमें हर डॉरमेट्री में करीब १०० अभ्यासी ठहर सकते हैं। ध्यान- कक्ष दूसरी मंजिल पर है और वहाँ पर दोनों तरफ़ बरामदे हैं और थोड़ी ऊँचाई पर स्टेज बना हुआ है। ध्यान-कक्ष की गुंबद पर एक बहुत सुन्दर झाड़-फानूस टंगा हुआ है। पहली मंजिल पर एक सुसज्जित और विशाल कार्यालय है जिसमें कम्प्यूटर और प्रोजेक्टर भी है जिसका प्रयोग अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिये किया जाता है।

आश्रम में रविवार और बुधवार के सत्संग नियमित तौर पर किये जाते हैं। हर महीने के पहले रविवार को पूर्ण दिवसीय कार्यक्रम में अभ्यासी प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन नियमित रूप से किया जाता है। मालिक के जन्मदिन के अवसर पर भंडारों का आयोजन किया जाता है।

आश्रम की इमारत तीन तरफ़ से खुली है और एक तरफ़ श्री राम शिक्षा सदन है। आश्रम के दो बड़े फाटक सेक्टर की दो मुख्य सड़कों पर खुलते हैं। सुन्दर बगीचे, फूलों की क्यारियां और पानी का फव्वारा इस आश्रम की सुन्दरता में चार चाँद लगाता है।

To download or subscribe to this newsletter, please visit http://www.sahajmarg.org/newsletter/india For feedback, suggestions and news articles please send email to in.newsletter@srcm.org
© 2009 Shri Ram Chandra Mission ("SRCM"). All rights reserved. "Shri Ram Chandra Mission", "Sahaj Marg", "SRCM", "Constant Remembrance" and the Mission's Emblem are registered Trademarks of Shri Ram Chandra Mission.This Newsletter is intended exclusively for the members of SRCM. The views expressed in the various articles are provided by various volunteers and are not necessarily those of SRCM.